Slide - 1

राजस्थानी लोकनृत्य परंपरा को सिंचित करती वंचित कालबेलिया जनजाति ।

डॉ.हर्षा त्रिवेदी
विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज-TC, दिल्ली

Slide - 2 Picture

भारतीय ग्रामीण परिवेश में लोक नृत्य एवं लोकगीत परंपरा प्राचीन है । जिसके माध्यम से क्षेत्रीय लोग अपना मनोरंजन किया करते थे। लोक अर्थात जनसाधारण के मनोरंजन के ऐसे साधन;जो व्यक्ति मात्र की पहुंच में हो और किसी भी विशेष अवसर पर उनका आयोजन किया जा सके। लोकनृत्य परंपरा का उद्भव कब और कहां से हुआ?यहनिश्चयपूर्वक कहना तो संभव नहीं है;लेकिन आज की जनजातियों के नृत्य को देखने से यह कहा जा सकता है कि लोकनृत्य संपूर्ण विश्व में किसी ना किसी रूप में आज भी प्रचलन में है**जो अपने समाज के विश्वास, अस्मिता और अदम्य इच्छाशक्ति के कारण बचा हुआ है ।** कहा भी जाता है कि सबकुछ जीत लेने और अंत तक हिम्मत न हारने में कोई फर्क नहीं है । लोक कलाओं की वंशावली में **कालबेलिया नृत्य अपने समय और समाज का इक़बालिया बयान है ।**

Slide - 3

नृत्य परंपरा को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं-

1.लोकनृत्य 2.शास्त्रीय नृत्य।

जब लोकनृत्य में कला की जटिलताओं औरसूक्ष्मताओं का समावेश हो गया; तो यह एक विशेष वर्ग तक सीमित होकर रह गया और यह शास्त्रीय कला बन गया। लोकनृत्य "स्वान्तसुखायः" अर्थात समुदाय विशेष के अपने आनंद के लिए होते हैं;लेकिन शास्त्रीय नृत्य अर्थोपार्जन का साधन।

राजस्थान एक ग्रामीण बहुल आबादी वाला राज्य है।इसके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को समझने हेतु इसके गांवों में विद्यमान लोक कलाओं को समझना होगा। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का एक कथन द्रष्टव्य है- "मैंने इस बात को असंख्य बार दोहराया है कि भारत अपने चंद शहरों में नहीं बल्कि 7 लाखगांव में रहने वाले लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों पर टिका हुआ है। इसलिए हमारी मूल पहचान शहरी और ग्रामीण अंचल में प्रचलित संस्कृति ना होकर आदिकाल से चली आ रही आस्था,विश्वास, उल्लास,उमंग की अभिव्यक्ति लोक नृत्य परंपराओं में देखी जा सकती है। यह लोकनृत्य परंपराएं लौकिक जीवन के संघर्ष और खुशहाली को अभिनित करती हैं। सांस्कृतिक मूल्यों की पृष्ठभूमि में लोकनृत्य कला एक महत्वपूर्ण आधार है;क्योंकिलोकनृत्य कला में लौकिक जीवन के रीति-रिवाज खान-पान,रहन-सहन, तीज-त्यौहार,शादी-विवाह एवं मनुष्य के दैनिक जीवन के संघर्ष की अभिव्यक्ति की अभिव्यंजना होती है। इसलिए संपूर्ण राजस्थान के सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य को समझने के लिए लोक नृत्य परंपरा को समझना अति आवश्यक है।"

राजस्थानी लोकनृत्य परंपरा प्राचीनकाल से प्रचलित है;और इन्हें सीखने और समझने हेतु किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। जन्म के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी लोकनृत्य चलते रहते हैं। चाहे विवाह समारोह हो याकोई त्यौहार,नृत्य का संबंध आंतरिक प्रसन्नता और उल्लास से है।साथ ही **सामुदायिक प्रवृत्ति** को बढ़ावा देने हेतुलोकनृत्य की विशेष भूमिका रहीहै।

Slide 4

राजस्थान के लोकनृत्य की बात की जाए तो इसे हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं :

1. क्षेत्रीय नृत्य : जिससे किसी क्षेत्र विशेष की पहचान होती है।
2. जातीय नृत्य : विशेष जाति समुदाय द्वारा किए जाने वाले नृत्य ।
3. व्यवसायिक नृत्य : ऐसे नृत्य जिनसे आय प्राप्त होती है और जो व्यवसायिक रूप से प्रचलित हैं।

राजस्थान के **क्षेत्रीय नृत्यों में गैर,गीदड़, चंग, कच्छीघोड़ी,ढोल, बम, घुडला** आदि को लिया जा सकता है।

जातीय लोकनृत्य में **भील,मीणा,गरासिया,बंजाराकालबेलिया** आदि विशेष जातियों द्वारा किए जाने वाले **गवरी, गैर, चकरी, कालबेलिया** आदि नृत्य शामिल हैं।

व्यवसायिक लोक नृत्यों में **भवाई,तेरहताली, कच्छीघोड़ी** आदि सम्मिलित है।

कालबेलिया जनजाति एवं नृत्य

राजस्थान के जनजाति समाज में **6 जनजातियों** का स्थान प्रमुख है जिसमें **भील,मीणा,गरासिया, डामोर,सहरिया और कथौड़ी** जनजाति है। **कालबेलिया** और **बंजारा** जनजाति भी राजस्थान में पाई जाती है ; लेकिन बहुत कम क्षेत्रफल में होने और घुमंतू होने के कारण इनकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया और ना ही इन्हें समाज की मुख्य दिशाधारा में लाने के लिए कोई विशेष प्रयत्न किया गया। चुकिंलोकनृत्य किसी समाज और समुदाय विशेष के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश का प्रतिबिंब होते हैं, अतः कालबेलिया नृत्य को समझने से पूर्व कालबेलिया जनजाति का परिचय नितांत आवश्यक है।

कालबेलिया जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है - दो शब्दों 'काल' और 'बेलिया' से मिलकर बना है। 'काल' अर्थात स्वयं महाकाल भगवान शिव और 'बेलिया' अर्थात भगवान शिव का वाहन नंदी बैल। यह समाज **नाथ संप्रदाय** को मानता है। शिव इनके आराध्य है। इन्हें भोलेनाथ का वंशज माना जाता है। भोलेनाथ का वंशज होने के कारण यह लोग **कानों में कुंडल,रुद्राक्ष और भगवे वस्त्र** धारण करते हैं;जो कि भगवान शिव के स्वरूप को स्पष्ट करता है; साथ ही सांप को भगवान शिव से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता, इसीलिए कालबेलिया जनजाति के लोग सांपों का पालन पोषण करते हैं।

इन्हें **'सपेरा जनजाति'** के नाम से भी पुकारा जाता है।कालबेलिया नृत्य की सांस्कृतिक प्रथा के पीछे **अनुष्ठान कार्यों** और **प्रतीकात्मक चरित्र**(symbolic character)की खोजमहत्वपूर्ण बात रही है । पिछले चार दशकों में इस नृत्य शैली के लोकप्रिय होने

के पीछे एक मुख्य कारण राष्ट्रीय सांस्कृतिक नीति का ″लोक″ नृत्य रूपों को तेजी से बढ़ावा देना भी रहा है । पिछले 40 सालों में राजस्थान में बढ़ते पर्यटन उद्योग ने भी इस कला के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया । राष्ट्रीय दर्शकों के लिए तेजी से एक मार्केटिंग योग्य उत्पाद के रूप में इसे चित्रित किया गया है । राजस्थान के लक्जरी होटल, डेजर्ट सफारी कैंप, या स्थानीय रेस्टौरेंट इत्यादि में इस नृत्य का प्रदर्शन शुरू हुआ । परिणाम स्वरूप उन्हें ″पारंपरिक″ **राजस्थानी प्रदर्शन कलाओं के मुख्य प्रतिनिधियोंमें से एक** के रूप में देखा जाने लगा है।

1980 के दशक से लोक कलाओं में राष्ट्रीय रुचि ने कुछ कालबेलिया परिवारों को अपनी आजीविका स्थानांतरित करने में सक्षम बनाया । गुलाबी सपेरा को अन्य कालबेलिया कलाकारों द्वारा अग्रणी और प्रथम कालबेलिया के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है । संगीत नाटक अकादमी के सौजन्य सेकालबेलिया महिलायें सन 1989 से बड़े राष्ट्रीय मंचों पर इस नृत्य का प्रदर्शन करने लगी थीं । सन 1985 में संयुक्त राज्य अमेरिका में **गुलाबी सपेरा** के पहले प्रदर्शन के बादकई कलाकारों, संगीतकारों, नर्तकियों को वैश्विक स्तर पर मौका मिलने लगा ।

सन 2003 में, कालबेलिया जनजाति ने सरकार से उनके नृत्य को दर्जा देने का अनुरोध किया। इसके पीछे समुदाय की आर्थिक स्थिति को बढ़ाने एवं अपनी ″विशिष्ट पहचान″ को बनाए रखने की मंशा थी । **जयपुर में कालबेलिया नृत्य विद्यालय** की शुरुआत ने स्थिति को अधिक मज़बूत किया । गणतंत्र दिवस परेड में भी इन्हें शामिल होने का मौका मिला है ।

Slide- 5

सापों को कालबेलिया जनजाति के लोग अपनी बीन पर नचाने में सिद्धहस्त हैं। यह जनजाति अधिकांशतः राजस्थान के **अजमेर, चित्तौड़, उदयपुर, जयपुर** और **जोधपुर** आदि जिलों में पाई जाती है।लेकिन इनकी **सबसे अधिक आबादी पाली** जिले में है । इन्हें **अनुसूचित जनजाति** का दर्जा प्राप्त है। इस जनजाति के लोग सामान्यतः अन्य समाजों से कटे हुए रहते हैं और अस्थाई रूप से डेरा डालकर या तंबू बांधकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर निवास करते हैं। अलग-अलग स्थान पर रहने

के कारण इन्हें विभिन्न प्रकार की वनस्पति और वहां के जीव जंतुओं की विशेष जानकारी रहती है और इसी जानकारी के कारण यह कई तरह के **आयुर्वेदिक उपचार में भी सिद्धहस्त** हैं; जो कि इनकी आमदनी में मदद करता है; साथ ही शिव भक्त सांपों में इनकी विशेष आस्था है और सांप हत्या इनकी जाति में पूर्ण रूप से निषेधहै। सामान्यतः यह लोग एक बेंत से बनी टोकरी में सांप अधिकांशतः नाग को बंद कर घर-घर लेकर घूमते हैं और भीख मांगकर अपनीआजीविका चलाते हैं। अगर गांव में किसी के घर सांप या नाग निकलता है; तो उसे पकड़ने हेतु भी इन्हेंबुलाया जाता है। यह लोग बिना सांप को मारे उसे पकड़ कर ले जाते हैं। इनका मुख्यव्यवसाय **सांपों को पकड़ना,सर्पदंश का इलाज, सांप का जहर निकालना और सांप के जहर का व्यापार** करना है। सन 1972 के वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के अस्तित्व में आने के बाद से यह जनजाति अपने सांप पकड़ने और उसका जहर निकालकर बेचने के पारंपरिक पेशे से दूर हो गई है।

Slide-6 UNESCO Video

Slide - 7

कालबेलिया नृत्य

कालबेलिया नृत्य राजस्थान का लोकनृत्य है ; जो संपूर्ण विश्वमें अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहनृत्य कालबेलिया जनजाति द्वारा किया जाता है। कालबेलिया जनजाति द्वारा किए जाने वाले नृत्यों को मुख्यरूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है ।

1. पणिहारी

यह नृत्य भीख मांगते समय किया जाने वाला नृत्य है; जो कि विशेषकर महिलाओं द्वारा किया जाता है। 'पणिहारी' शब्द से तात्पर्य है- 'कुएँ पर पानी लेने जाने वाली महिलाएँ'; जो अपने सिर पर एक या कई मटके एक साथ रखकर कुएं से पानी भर कर लाती है। इसी पर राजस्थान का पणिहारी गीत प्रचलित है। और इसी

गीत पर कालबेलिया जाति की महिलाओं द्वारा पणिहारी नृत्य किया जाता है। इस नृत्य में **प्रमुख रूप से बांसुरी और ढोलक** का प्रयोग किया जाता है। कालबेलिया महिलाएं अपने सर पर कई सारे मटके एक साथ रखकर यह नृत्य करती हैं।

Dance Slide 8

2. इंडोणी

घड़े और सिर के बीच रखी जाने वाली कपड़े की बनी गोलाकार वस्तु को 'इंडोणी' कहा जाता है। उसी के नाम पर इस नृत्य का नाम है। **पुंगी, खंजरी** आदि वाद्ययंत्रों के प्रयोग के साथ गोलाकार घूमते हुए यह नृत्य किया जाता है। नृत्य करने वाले नर्तक अपनी विभिन्न भाव भंगिमाओं के माध्यम से **कामुकता का प्रदर्शन** करते हैं; साथ ही इसी तरह के **कलात्मक कपड़े** पहनते हैं।

3. बागड़िया

यह नृत्य भीख मांगते समय कियाजाने वाला नृत्य है। कालबेलिया द्वारा घर-घर जाकर पुंगी या बीन के माध्यम से सांपों को नचाकर भीख मांगते समय यह नृत्य किया जाता है। यह केवल स्त्रियों के द्वारा किया जाने वाला नृत्य है और इसका प्रमुख वाद्ययंत्र **'चंग'** होता है

Slide dance 9

4. शंकरिया

यह प्रेम आधारित नृत्य है; जो जोड़े में या युगल रूप से किया जाता है। युगल नृत्य होने के कारण इसमें अद्भुत अंग संचालन देखने को मिलता है।

कालबेलियानृत्य सभी राजस्थानी नृत्योंमें सबसे कामुक नृत्य की श्रेणी में माना जाता है ; क्योंकि इसमें सांप की तरह शरीर को लचकदार तरीके से घुमा-घुमा कर नृत्य की भाव भंगिमाएं बनाई जाती हैं। यह नृत्य मुख्यतःमहिलाओं द्वारा किया जाता है। पुरुष इसमें विभिन्न प्रकार के पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाने का कार्य करते हैं। यह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने वाला एक लोकनृत्य है।जब यह सभी वाद्य यंत्र एक साथ बजते हैं तबएक प्रकार के अद्भुत संगीत का संचार करते हैं। बचपन से सांपों

के साथ रहने, उन्हें पकड़ने और उनका जहर निकालने के कार्य के कारण कालबेलिया नृत्य की अधिकांश भाव भंगिमाएं भी सांपों की तरह ही हैं । जिस तरह एक नागिनलोचदार तरीके से चलती है। उसी प्रकार कालबेलिया जाति की महिला नर्तकी नागिन की तरह ही भाव भंगिमाएं करते हुए लोचदार नृत्य करती हैं। इसलिए इस नृत्य को 'सपेरा नृत्य' भी कहा जाता है।इस नृत्य के गीत अधिकांशतः पौराणिक चरित्रों या कहानियों पर आधारित होते हैं। कालबेलिया लोग गीतों की रचना और नृत्य के अनुसार इन गीतों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने में माहिर होते हैं।

इनके गीतों में **हलेरिया, दूल्हा आरती, गीत चंदन, पर्व गीत, जलवायु गीत, पाश गीत, प्रेम गीत, काल गीत** एवं **गाथा गीत** प्रमुख है । "काल्यो कूद पड़्यो" नामक प्रसिद्ध गीत वैसे तो नागपंचमी को गाया जाता था लेकिन इसकी अपार लोकप्रियता की वजह से अब ये गीत हर उत्सव में गाया जाने लगा है । वैसे पौराणिक चरित्रों में **भगवान शिव, भोमिया (जैन देवता) , भर्तृहरि, गोपीचन्द,प्रेमी निहालदे , सुल्तान**इत्यादि की चर्चा होती है ।

Slide : 10

कालबेलिया नृत्य के प्रमुख वाद्ययंत्र

इस नृत्य का प्रमुख पारंपरिक वाद्ययंत्र है **'पुंगी'** (बीन), जो कि लकड़ी से बना होता है।इसका उपयोग सांप पकड़ने हेतु इस जनजाति द्वारा किया जाता रहा है; साथ ही कुछ अन्य वाद्ययंत्र जैसे **ढोलक, खंजरी, मोरचंग, मुरलिया** आदि भी उपयोग में लिए जाते हैं।

Slide : 11

कालबेलिया पोशाक

नृत्य के समय एक पारंपरिक पोशाक पहनी जाती है। ऊपरी शरीर पर यह महिलाएं अचकन पहनती है; जिसे अंगरखा भी कहा जाता है। सर पर ओढ़नी,निचले शरीर पर यह एक लंबा और घेरदार लहंगा पहनती है।जिस परकाले,लाल और अधिकतर चटकीलेरंगों का प्रयोग होता है।इनपर लाल,सफेद,धब्बेदार या

धारीदारचाँदीया चमकीले तारों से कढ़ाई की हुई होती है। इनकी पोशाक पर कई बार कांच का काम भी देखने को मिल जाता है।

Slide : 12

कालबेलिया आभूषण

कालबेलिया नृत्य के समयमहिलाओं द्वारा कुछ विशेष आभूषण और पारंपरिक गहने भी पहने जाते हैं। इनके अधिकतर आभूषण चांदी से बने होते हैं। जिसमें कानों में बड़े-बड़े **झुमके** तथा ऊपर की ओर कई**बालियां** पहनी जाती है। साथ ही **बोरला** और **नाक में बड़ी नथ, गले में कंठ,हंसली, हाथों में सफेद चूड़े** के बीच में चांदी के कुछ **कड़े, हथफूल, कमरबंद** और पैरों में मोटे चांदी से बने हुए कड़े होते हैं। इनके अधिकांश आभूषण बहुत भारी होते हैं। गले में पहने जाने वाली **हंसली** करीब एककिलो चांदी से बनाई जाती है; जो बीच से मोटी और किनारों से थोड़ी पतली होती है। कानों में पहनने वाले झुमके भी काफी वजनी होते हैं।

Slide : 13

कालबेलिया नर्तक और गोदना

गोदना अर्थात आज के समय में जिसे 'टैटू' के नाम से जाना जाता है। गोदने की परंपरा विश्व भर में प्रचलित है। बूढ़े, बच्चे,जवान या किसी उम्र से इसका कोई लेना देना नहीं है। कई लोग परंपरा के चलते गोदना गोदवाते हैं तो कुछ लोग किसी विशेष त्योहार के अवसर पर। कुछ प्रजातियों में यह श्रृंगार के रूप में प्रचलित है; तो आज की पीढ़ी इसे शौक सेगुदवाती है। महिला और पुरुष वर्ग से भी इसका कोई सरोकार नहीं है। दोनों में यह प्रचलित है। इस परंपरा में राजस्थान की कालबेलिया जनजाति अत्यंत निपुण है। यह कार्य अधिकांशतः कालबेलिया महिलाएं करती हैं और इसके लिए अलग-अलग प्रकार की सुइयों का प्रयोग किया जाता है। कालबेलिया नर्तक अपने शरीर पर कई प्रकार की आकृतियां विशेषकर सांपों या नागों से संबंधित आकृतियां बनाते हैं। जिससे नृत्य के समय इनका शरीर आकर्षक लगता है। इस हेतु किसी भी तेल के काजल को तेल या पानी में मिलाकर एक विशेष लेप बनाया जाता

है। जिसमें सुइयों को डुबोकर शरीर में चुभा कर विभिन्न प्रकार की लुभावनी आकृतियां बनाई जाती हैं। इसके पश्चात सूजन को कम करने हेतु हल्दी या गोबर के लेप को लगाया जाता है। जिससे गोदना जल्दी ठीक हो जाता है। पहले यह परंपरा केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित थी;लेकिन वर्तमान में शहरों में उसे बहुतायत में अपनाया जा रहा है। कालबेलियानृत्तकों के लिए इसका संबंध परंपरा, मान्यता और आस्था से रहा है।कालबेलिया महिलानर्तकियों की मान्यता है कि माथे पर बिंदी गुदवाना बुद्धि को बढ़ाता है; वही ठोड़ी में गोदना जिसे 'मुटकी' कहते हैं,दांतो को मजबूत करने का साधन है। कानों में गोदने को 'झुमका'और नाक में गोदने को 'फुल्ली'कहते हैं। गले में गुदवाने को यह मधुर आवाज से जोड़ते हैं। इसी तरह गोदना परंपरा का कालबेलिया नृत्य में एक विशेष स्थान है।

आज से 30-40वर्ष पूर्व तक कालबेलिया नृत्य की कोई अपनी विशेष पहचान नहीं थी। इसका मुख्य कारण था इस समुदाय में महिलाओं को बाहर नृत्य प्रदर्शन का ना तो अधिकार था और ना ही अनुमति। केवल अपने मनोरंजन और किसी खुशी के मौके पर कालबेलिया जनजाति द्वारा यह नृत्य किया जाता था।2010मेंयूनेस्कोद्वारा**अमूर्त सांस्कृतिक विरासत(ICH)**की प्रतिनिधि सूची में इस नृत्य को दर्जा मिलने के बाद विश्वभर में इसकी ख्यातिबढी है।

Slide : 14 gulabo pic

कालबेलिया नृत्य और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारगुलाबो / गुलाबी सपेरा

सन 1980 के दशक के उत्तरार्ध में,कालबेलिया (कालबेलिया) समुदाय की कुछ महिलाओं ने पेशेवर नर्तकियों के रूप में काम करना शुरू किया । वैश्विक मंचों पर इस तरह के प्रदर्शनों की सुर्खियोंमें लगातार बढ़ोत्तरी हुई ।

अंतरराष्ट्रीय विश्व संगीत समारोह और राष्ट्रीय (भारतीय) लोक मेलेकालबेलिया नृत्य और इस नृत्य की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृत्यांगना गुलाबों / गुलाबी सपेरा को अलग रखकर देखनाअसंभव है। जहां कालबेलिया नृत्य की विश्व में पहचान गुलाबो/ गुलाबी सपेरा के नाम से है; वही गुलाबो की पहचान कालबेलिया नृत्य से। एक ऐसी नृत्यांगना जिसका जीवन, संघर्ष की जीती जागती मिसाल है। गुलाबों से पहले यह

नृत्य केवल मनोरंजन का साधन हुआ करता था;जिसका ना कोई व्यवसायिक महत्व था ना कोई पहचान। अपने गाँव,समाज और देश से निकलकर कालबेलिया नृत्य को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में गुलाबों की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक ऐसी बहादुर नारी जिसने मौत को भी मात देदी।

सदियों से कालबेलिया जनजाति की स्थिति बहुत दयनीय थी।जिसके चलते इनके बीच एक प्रथा प्रचलित थी किलड़की का जन्म होते ही उसे जिंदा दफन कर दिया जाए;क्योंकि इनके पास रहने और खाने के साधनों का अभाव था। ऐसे में लड़की को संभालना और उसका पालन पोषण अत्यंत कठिन था। एक पुत्री को फिर भी अपना लिया जाता था; लेकिन दूसरी कन्या का जन्म होते ही उसे एक गड्ढा खोदकर उस पर घास डालकर मिट्टी से ढक दिया जाता था। इस तरह जीते जी दफन करने की प्रथा अत्यंत क्रूर है; लेकिन उनका मानना था कि एक माता के गर्भसे उसे धरती माता के गर्भ में डाल दिया गया है।गुलाबो भी इसी प्रथा का शिकार हुई; लेकिन गुलाबों के पिता चामुंडा माता के अनन्य उपासक थे और उनका मानना था कि सभी देवियों का पूजन कन्या रूप में ही किया जाता है;तो किसी कन्या की इस तरह से निर्मम हत्या कैसे की जा सकती है ? समाज से विद्रोह के कारण उन्हें अपने गांव और समाज से दूर अजमेर आकर निवास करना पड़ा। जब गुलाबों का जन्म हुआ तो उनके घर में पहले से तीनबेटियां और तीन बेटे थे। सातवें नंबर पर गुलाबों का जन्म हुआ।

गुलाबों के जन्म के वक्त उनके पिता घर पर नहीं थे। समाज के लोगों ने मिलकर गुलाबों को ले जाकरदफन कर दिया। जब उनकी माता को होश आया तो उन्होंने अपनी बहन से इस बारे में पूछा। बहन के यह बताने पर कि गुलाबों को दफन कर दिया गया है,वह फूट-फूट कर रोने लगी। उन्होंने अपनी बहन से विनती की कि मुझे उस जगह ले जाओ जहां मेरी बेटी को दफन कर दियागया है; साथ ही गुलाबों की माँ नेअपनी बहन से कहा कि तुम्हारे सिर्फ पांच बेटे हैं, मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी बेटी जीवित है।आज से वह तुम्हारी बेटी है।गुलाबों की मौसी इस बात से पूर्णतया परिचित थी कि दफन किए जाने के पाँच-छ: घंटे बाद रात को 12:00 बजे उस स्थान पर जाने से कोई फायदा नहीं; लेकिन अपनी बहन के ज़िद्द करने पर वे दोनों रात के

12:00 बजे वहां पहुंची।यह एक मां की मातृत्व शक्ति और प्रकृति का अद्भुत चमत्कार ही था; जो गुलाबो/ गुलाबी सपेरा उन्हें जीवित अवस्था में मिली। स्वाभाविक है कि जिस समाज ने गुलाबों / गुलाबी को जीवन मिलते ही मृत्यु की गोद में पहुंचा दिया उसके आगे का जीवन कितना कष्टप्रद रहा होगा? लेकिन गुलाबो / गुलाबी सपेरा साहस के साथ आगे बढ़ती रही और अंततः कालबेलिया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में सफल रही।फ्रेंच लेखक रॉबिन (Robin) और वेरानिक (Veronique) ने गुलाबो पर एक किताब लिखी है जो *Gulabi Sapera, danseuse gitane du Rajasthan* शीर्षक से प्रकाशित है । लोक नृत्य में गुलाबो के योगदान एवं लोकप्रियता को देखते हुए वर्ष 2011 में उन्हेंटीवी सीरियल बिग बॉस में प्रतिभागी के रूप में शामिल होने का अवसर मिला । गुलाबो के साथ ही **राजबाला सपेरा** का नाम भी कालबेलिया नृत्य के संदर्भ में लिया जाता है ।

निष्कर्ष :

कालबेलिया नृत्य को एक ऐसा सांस्कृतिक उत्पाद माना जा सकता है जो राजस्थान में स्थानीय परिस्थितियों और आर्थिक वास्तविकताओंके बीच अपनी जैविक संरचना में अनूठा है । इसका संरक्षण, दस्तावेजीकरण, फिल्मांकन, प्रचार-प्रसार एवं प्रशिक्षण न केवल इस समाज के हित में होगा अपितु भारत की सांस्कृतिक बहुलता एवं छविकरण में भी यह अपनी नवीनता के साथ सहायक सिद्ध होगा । भारत में वैश्विक उत्तर-औपनिवेशिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी विकास के नव-प्राच्यवादी सहसंयोजन के रूप में विकसित होता हुआ कालबेलिया नृत्य अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी उपयुक्त है । प्रदर्शन कलाओं की अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता और भारतीय नृत्य की समकालीन वास्तविकताओं पर ध्यान दिया जाना जरूरी है।

अंत में इतना ही कहना चाहूंगी किप्रतिनिधित्ववादी सांस्कृतिक प्रथाओं की अनदेखी उचित नहीं है । राष्ट्रीय लोक विरासत के रूप में भी इसका संरक्षण आवश्यक है । **ये सांस्कृतिक प्रथाएँ ही प्रकाश के वे अंतःकेंद्र हैं जो पवित्र, निर्मल विचारों और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये साहित्य और संस्कृति के माध्यम से सच्चा बयान प्रस्तुत**

करते हैं । एक राष्ट्र के रूप में हमें ऊर्जावान, प्रज्ञावान और अग्रगामी बनाते हैं । यह भी सिखाते हैं कि दृष्टि के विस्तार में हम एक हैं ।

Slide - 15

धन्यवाद

सहायक ग्रंथ सूची :

1. Chand, Attar. 1991. Rajiv Gandhi: His Mind and Ideology. Delhi: Gian Publishing House
2. Grodzins-Gold, Ann. 2011. "Awakening Generosity in Nath Tales from Rajasthan."In Yogi Heroes and Poets: Histories and Legends of the Naths, edited by David N. Lorenzen and Adrian Muñoz,91-108. Albany: State University of New York Press.
3. Samar, Devi Lal. 1979.Folk Entertainments of Rajasthan. Udaipur: Mangal Mudran.
4. Verma, Vijay. 1987.The Living Music of Rajasthan. New Delhi: Office of the Registrar General.
5. Kalbeliya Dance from Rajasthan: Invented Gypsy Form orTraditional Snake Charmers' Folk Dance?-Ayla Joncheere,Congress on Research in Dancedoi:10.1017/S0149767717000055.
6. A Tradition of Transience:The Kalbelia Dance – K.S. Mochish,2016.Discover India Project (DIP)
7. राजस्थान के लोकनृत्य -देवीलाल सामर, गींडा राम वर्मा, भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर, 2019
8. राजस्थानी लोकगाथाएँ -डॉ कृष्ण कुमारा शर्मा, डॉ रमेश भानावत, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2019
9. राजस्थान के प्रचलित लोक नृत्य- पन्नालाल मेघवाल, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2022
10. राजस्थान की लोक नृत्य परम्पराएं- पृथ्वीसिंह बूंदवाल, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2019
11. https://www.kalbeliyaworld.com/artists-and-buddies/raki_and_carolina/